ISSN : 2393-9362

साहित्य सरस्वती

Peer Reviewed Journal

वर्ष–तेरह, अंक 49 । जनवरी–मार्च 2026

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय
सागर (म.प्र.)

पूर्व शिक्षक एवं सचिव श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर, पंडित शुकदेव प्रसाद तिवारी को 'पंडित शंकरदत्त चतुर्वेदी आदर्श शिक्षक सम्मान 2025' से सम्मानित करते सागर नगर के विधायक श्री शैलेन्द्र जैन तथा अन्य विद्वतजन।

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर के स्वराज सभागार में स्वर्गीय श्री उमाशंकर शुक्ल के जन्म शताब्दी समारोह पर आयोजित कार्यक्रम में पूर्व सांसद श्री लक्ष्मीनारायण यादव एवं भोपाल के माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता वि. वि. के पूर्व कुलपति श्री दीपक तिवारी को सम्मानित करते संस्था के अध्यक्ष, सचिव एवं सदस्यगण ।

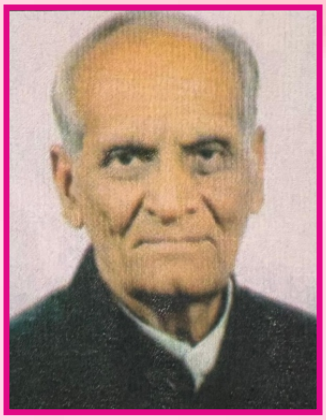

अध्यक्ष
के.के.सिलाकारी (एड.)

साहित्य सरस्वती के
सहृदय पाठकों को
मकर संक्रांति
गणतंत्र दिवस, बसंत पंचमी
महाशिवरात्रि तथा
होली पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएँ।

सचिव
पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी

साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष – तेरह, अंक–49, जनवरी – मार्च 2026

ISSN-2393-9362, Peer reviewed Journal

प्रधान संपादक
प्रो. सुरेश आचार्य

●

संपादक
डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

●

उप–संपादक
प्रो. पुरुषोत्तम सोनी
प्रो. ऋतु यादव

व्यवस्था एवं परामर्श

- पं. के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- श्री लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी, पूर्व सांसद
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN-2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704
Peer reviewed Journal वर्ष- तेरह, अंक-49, जनवरी - मार्च 2026

विषय विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुरेश आचार्य, अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी. लिट्, अध्यापक, हिन्दी विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

प्रो. मधु संधु, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब

प्रो. रूबी जुत्सी, हिन्दी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय, कश्मीर, भारत

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट, गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन: 07582-243759, मोबाइल: 7067920078

- लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।
- सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।
- रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।

आवरण-सना खान
सुभद्रा ऑफसेट प्रिन्टर्स, ग्वालियर (म.प्र.)
मोबाइल 9827096843

मुद्रण
सुभद्रा ऑफसेट प्रिन्टर्स, ग्वालियर (म.प्र.)
मोबाइल 9827096843

ISSN - 2393-9362

वर्ष - तेरह, अंक-49, जनवरी - मार्च 2026

अनुक्रम

4 सुरेश आचार्य- संपादकीय

6 लक्ष्मी पाण्डेय - हस्तक्षेप

धरोहर

11 मोहनदास करमचंद गाँधी - जाति बनाम वर्ग

14 विष्णु प्रभाकर - एकांकी - पाँच रेखाएँ : एक बिंदू

26 राजी सेठ - देसीवाद आत्मान्वेषण का क्षेत्र

34 राजी सेठ - आत्मकथा

लेख

30 डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी - पत्रों में गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर

35 छाया चौकसे - मुक्तिबोध का पत्र साहित्य

41 संजय आठिया - नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर का स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प

45 समीर सुब्बा - लेपचा शामन के अंतिम संस्कार संबंधी अनुष्ठा : उनकी पौराणिक कथा के अनुसार

51 एस. साधना चनु - मणिपुरी संस्कृति के उन्नयन में पंडित निङ्थौखोङ्जम खेलचन्द्र का योगदान

कहानियाँ

56 भावना शेखर - एक और अनहोनी

62 अंकित शर्मा - भेदभाव

64 तीर्थराज शर्मा - कुहासे के बीच

68 पूजा गुप्ता - शन्नो का फैसला

82 **साक्षात्कार** प्रसिद्ध उपन्यासकार चन्द्रकान्ता विशिन जी से सफलता 'सरोज' की बातचीत के कुछ अंश

कविताएँ / सज़लें / गज़लें

चौकड़िया / गीत

50 पूरन सिंह राजपूत

55 डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'

74 माधुरी राऊलकर

75 एड. हरवेंद्र सिंह गौर

75 अमर अद्वितीय

76 ज. ल. राठौर

77 प्रभा कश्यप डोगरा

78 डॉ. रामवल्लभ आचार्य

79 विक्रम सिंह

81 प्रीति सिन्हा

85 **संस्मरण** - प्रकाश मनु वे मेरे बचपन के हीरो भी थे, गाइड भी

समीक्षाएँ

94 सुरेन्द्र अग्निहोत्री -डॉ. अर्चना प्रकाश- 'बादल और बिजली'-बाल कहानी संग्रह

95 डॉ. पंकज साहा - ज्ञानचंद मर्मज्ञ- ''आरोही''-दोहा संग्रह

99 डॉ. पुष्पिता शुक्ला -अरविन्द मिश्र- 'शिष्टाचार आयोग की सिफारिशें' -व्यंग्य संग्रह

102 डॉ. नीरज दइया -रत्नकुमार सांभरिया- 'नटनी'-उपन्यास

105 ओजेन्द्र तिवारी- चंद्रा नेमा, भारती नेमा- 'अनादि प्रज्ञा'-भक्ति गीत संग्रह

लघुकथाएँ

109 देववंश दुबे - गहरे बादल, महँगाई

108 प्रतिक्रिया

110 परिक्रमा

101 पुस्तकें मिलीं

101 पत्रिकाएँ मिलीं

107 रचनाकारों से निवेदन

सम्पादकीय – सुरेश आचार्य

ट्रंप और टैरिफ

मैं श्री डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा फैन हूँ। आदमी हो तो ट्रंप साहब जैसा चाहे चार दिन बाद हो। दोबारा अमेरिका के राष्ट्रपति के चुनाव के दौरान किसी ने उन पर फायर किया। गोली उनके पास तक गई फिर ज्योंहि उसने उन्हें देखा तो लौटकर यह कहते हुए भागी कि अरे बाप रे ये तो ट्रंप हैं। वे बहुमत से विजयी हुए। अमेरिकी राष्ट्रपति आम तौर पर बड़े शान्त और शालीन होते हैं। ट्रंप साहब भी हैं। उन्होंने अपने परम मित्र श्री नरेन्द्र मोदी से मित्रता निभाते हुए अमेरिका और भारतीय व्यापार में लगनेवाला भारतीय टैरिफ़ बढ़ा कर पचीस से पचास प्रतिशत कर दिया। उनका यह बड़प्पन पूरी दुनिया ने देखा और वाह-वाह भी की। रूस और अमेरिकी दो बड़े बाजारों से नियतिबद्ध यूरोपियन यूनियन के एक तीसरे बाजार की संभावना टटोलते हुए मोदी जी ने नया दांव चलाया तो ट्रंप साहब को पुनः याद आ गया कि मोदी जी तो मेरे खास दोस्त हैं। अतः इधर-उधर की दो चार बढ़िया बातें करते हुए उन्होंने पचास प्रतिशत टेरिफ को घटाते हुए अठारह प्रतिशत कर दिया। इसे कहते हैं मित्रता। अब संसार है चार लोग हैं तो चालीस बातें करेंगे ही।

ईरान और अमेरिका में जो परस्पर खरी-खोटी चल रही है। अगर आपने श्री भगवतीचरण वर्मा की 'दो बांके' कहानी पढ़ी होगी तो आपका आनंद दो गुना हो गया होगा। सच्चे वीरों की पहचान यही है वे कहते नहीं हैं। करके दिखाते हैं। लड़ते हैं तो रूस और यूक्रेन की तरह सालों लड़ते हैं। वरना हम लोगों की तरह शांत बैठते हैं।

संसार तीसरे विश्वयुद्ध के आतंक से सहमा हुआ है और भाई लोग नये-नये शस्त्रास्त्र खोजने में लगे हैं। गांधी, मार्टिन लूथर किंग और खान अब्दुल गफ्फार के नाम भी एक दिन नई पीढ़ी भूल जाएगी और याद रखकर करेगी भी क्या। वे दिन-प्रतिदिन अर्थहीन होते जा रहे हैं। हाँ तो भैया टैरिफ एक तरह का आयात-निर्यात कर है। अमेरिका बड़ा बाजार है मगर दुनिया के कई देश मिलकर 'संघे शक्ति कलौ युगे' सिद्ध कर देते हैं। सो संघ के सामने सकल दंडवत है। संसार का पूरा बाजार भाव-ताव पर टिका है। भाव मतलब विक्रेता की इच्छा और ताव यानी खरीददार का रुख। सो दुनिया-देश के गाँव-गाँव, शहर-शहर में टेरिफ बढ़ता घटता रहता है। छोटे छोटे कारीगर सस्ती जगह की चीजें खरीदकर मँहगी जगहों पर बेचते हैं। इसी परंपरा पर बड़े-बड़े सौदागर, व्यापारी और दुकानदार अमीर होते रहते हैं। ज़रा से भाव बढ़ने पर कई साधु पुरुष मूर्च्छित हो जाते हैं और ज़रा सा घटने पर कूदने लगते हैं। इस सिद्धांत को उलट दें तो पूरा काम हो जाता है।

बाजार सिर्फ वहाँ नहीं होता जहाँ दिखता है। जहाँ वह दिखता नहीं वहाँ ज्यादा बड़ा होता है। सरकारें, इस खेल में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर पर्याप्त टेरिफ प्राप्त करती हैं। प्रशासनिक व्यवस्थाएँ भी कम नहीं हैं। सब मजे में हैं वजह टेरिफ और सिर्फ टेरिफ। आप कहेंगे क्या टें-टें लगा रखी है। सो सत्य है भ्राता । पूरी दुनिया टें-टें करती है तो हम क्या अलग हैं। चार लोगों के साथ मिलकर चलने में ही लाभ है। और लाभ के लिए ही सब तरह के टेरिफ हैं।